International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-08-2023, Accepted: 10-09-2023, Published: 27-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 33-35

छत्तीसगढ़ी साहित्य में स्त्री विर्मश

शिल्पी शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जे. योगानंद छत्तीसगढ़ कालेज रायपुर, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
मुंशी प्रेमचंद जी ने कहा है
"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।" अर्थात जहां स्त्री की पूजा और सम्मान होता है वहां पर देवता का वास होता है। मां शक्ति के द्वारा प्रभु शिव की आराधना की जाती है, वही भगवान शिव के द्वारा शक्ति की आराधना की जाती है। पुरूष में नारी के गुण आ जाते है तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरूष के गुण आ जाते है तो वह कुलटा बन जाती है।"

मूल शब्दः स्त्री विमर्श, नारी, कविता, महिला साहित्यकार

"नर है समाज का न्याय दया नारी है
प्रतिशोध भरा नर क्रोध क्षमा नारी है।।
है पुरूष शुष्क कर्तव्य मात्र इस जग में।
नारी सरस सहानुभूति इस जग में।।
डॉ. जगमोहन मिश्रा

साहित्य समाज का दर्पण है और यह हमें समाज का यथार्थ बोध कराता है। उपन्यास, कहानी, कविता अर्थात हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में हमें स्त्री विमर्श किसी न किसी रूप में देखने का मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अग्रसर होने के लिये तरह–तरह के संघर्षो से गुजरना पड़ता है। चाहे वह प्रकृति के साथ, स्वयं के साथ। साहित्य संस्कृति हो अथवा कला मुंशी प्रेमचंद से लेकर वर्तमान प्रसिद्ध साहित्यकारों तक ने अपने जीवन में अनेक संघर्ष किये हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में महिला साहित्यकारों ने संघर्षो का मुकाबला करते हुए अपने कलम से साहित्य जगत में नए मुकाम हासिल किए। अध्ययन गत सभी महिला साहित्यकारों ने साहित्य जगत में उपलब्धि हासिल करने के लिये अपने बाल्यावस्था से वर्तमान समय तक अनेक प्रकार के संघर्षो का सामना किया। किसी ने बचपन से ही आर्थिक समस्याओं से जूझते हुऐ जीवन यात्रा का शुभारंभ किया तो किसी ने शिक्षा के दौरान आर्थिक तंगी का सामना किया। कोई बचपन से ही पिता के प्यार की छांव से दूर माता के संघर्षो के साथ आगे बढ़ी तो किसी ने पारिवारिक समस्याओं का सामना करते हुए शिक्षा प्राप्त की तथा पारिवारिक जिमम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए लेखन कार्य भी किया।

छत्तीसगढ़ की प्रमुख महिला साहित्यकारों ने अपने जीवन में अनेक संघर्ष किये है और लक्ष्य को प्राप्त किया। ये महिला साहित्यकार तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालकर तथा वर्तमान में भी सक्रिय रूप से परिवार, आस–पड़ोस एवं समाज को अपने विचारो, कृतियों एवं कार्यो से पल्लवित कर रही है। कोई शिक्षाविद् होने के साथ–साथ साहित्यकार कवित्री है तो कोई प्रथम डी.लिट उपाधिधारी और समाज में प्रसिद्ध व्यक्तित्व है।

छत्तीसगढ़ की प्रमुख महिला साहित्यकारों की रचनाओं में स्त्री विमर्श केन्द्र विषय रहा है। डॉ. सत्यभामा आडिल ने "रतिहा पहागे" गोठ एवं दस्तक देता सूरज श्रीमती सुधा वर्मा ने "दुलारी क्षितिज के पार, ममता के छांव एक रिश्ता, एक नारी गुड़ियों के साथ, हम चालीस की कइसे इस धरती नोनी झन उडिया बन के चंदैनी गौरव में बसेरा, पंचवती प्यारी बिटिया ममता, कम्प्यूटर के सिक्का बसन्ती मां परेम म दाग रेवती के सुख एवं सौत के लइका श्रीमती सरला शर्मा ने माटी के मितान कुसुम कथा एवं सत्यवंद डॉ. निरूपमा शर्मा ने दाई खेलन दे पतरेंगी फूल बोलिक बूंदो का सागर उष्णिमा विचार के हीरा एवं छत्तीसगढ़ की महिला साहित्यकार डॉ. स्नेहलता पाठक ने द्रौपदी का सफरनामा, बाकी सब ठीक है बेला फूले आधी रात तथा डॉ.वंदना केंगरानी ने मुठ्ठी में बंद मौसम आंखों में आकाश डॉ. उर्मिला शुक्ल ने गोदना के फूल, इक्कीसवीं सदी के द्वार में "महाभारत में दुरपती छत्तीसगढ़ के औरत, बिन ड्योढी का घर आदि कृतियों के केन्द्र में स्त्री विमर्श है।

सरला शर्मा

छत्तीसगढ़ की पावन धरा पर ऐसे अनेक साहित्यकारों ने जन्म लिया है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के साथ छत्तीसगढ सहित्य को भी उंचाइयों तक पहुंचाया है। इनमें श्रीमती सरला शर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। सरला जी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में हिन्दी छत्तीसगढ़ी के साथ–साथ बंगला और संस्कृत में भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। सरला जी ने अपनी लेखनी से इस अंचल की पवित्रता साधुता, श्रद्धा, भावना और आत्मीयता का सुखद अनुभव कराया है। उनकी रचना विभिन्न सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ नारी विमर्श से संबंधित है। उन्होनं नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को न केवल समझा और अनुभव किया है बल्कि उसका सूक्ष्म अंकन कर सुंदर ढंग से भी प्रस्तुत किया है। इनमें "सुन संगवारी" नाम छत्तीसगढ़ी कहानी संग्रह में साध सीख कहानी संग्रह। सत्यवंद की सत्यवंद कहानी का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

"सत्यंवद"

यह कहानी छत्तीसगढ़ के ग्रामी अंचल में बसे एक गांव की है जिसकी नायिका प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका करूणा दुबे है। इस अध्यापिका के छात्र बल्लू द्वारा उसकी हत्या कर दी जाती है जिसका खुलासा उसी विद्यालय की छात्रा कल्याणी करती है। वह अपनी शिक्षिका के कहे इस वचन का मान रखती है। "सत्यंवद प्रियंवद" सच बोलो और प्रिय बोलो इस कहानी की शुरूआत फाल्गुन माह से होती है। गांव के विद्यार्थी होलिका दहन की तैयारी करते है। कुछ पैसे कम पड़ जाने पर कल्याणी, सोनी और माला नामक सहपाठी छात्राएं अपनी शिक्षिका के घर जाती है। वहां बल्लू नामक विद्यार्थी पहले से मौजूद रहता है। जो शिक्षिका को धमकी देता है। दोनों में बहस होती रहती है

और शिक्षिका बल्लू को धक्का देकर गिरा देती है। बल्लू बेहोस होकर गिर जाता है। जब उसे होश आता है तो वह उठकर अपनी मैडम को धमकी देकर चला जाता है।

इस घटना के करीब 10 दिनों के बाद सुबह यह खबर फैलती है कि करूणा बहन जी को किसी ने मार दिया है। तीनों सहेलियां शिक्षिका के घर पहुंचती है वहां पूरे गांव वाले पहुंच जाते है। पुलिस इस मामले में सभी से पूछताछ करती है। कल्याणी से भी पूछताछ होती है और वह हिम्मत करके पूरी घटना को बताती है। अगले दिन अपने पिता के साथ घर जाते समय बल्लू के साथी उसका अपहरण कर लेते है आर उसकी जबान काट दी जाती है। फिर भी कल्याणी हिम्मत नहीं हारती। वह अपनी जुबान से बोल तो नहीं पाती लेकिन पूरी घटना लिखती जरूर है जिससे न्याय की रक्षा हो सकें।

डॉ. निरूपमा शर्मा

डॉ. निरूपमा शर्मा छत्तीसगढ़ी की प्रथम कवियत्री के रूप में राज्य में प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ी में कविताएं और उनके द्वारा रचित गीत आकाशवाणी दूरदर्शन विभिन्न दैनिक समाचार पत्र और पत्रिकाओं में पिछले चार दशक से भी अधिक समय में प्रसारित और प्रकाशित हो रहे हैं। वर्तमान में निरूपमा जी अध्यात्म जीवन मूल्य एवं समाजपयोगी वक्तव्य को सोशल मीडिया में प्रसारित कर रहा है। गद्य, पद्य, निबंध आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में उनकी रचनाएं अध्यात्म, छत्तीसगढ़ के प्रति माटी प्रेम छत्तीसगढ़ी प्रेम जीवन दर्शन, जीवन मूल्य छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य एवं नारी विमर्श पर केन्द्रित रही है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर भी उन्होंने प्रकाश डाला है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत, ददरिया पर उनका कार्य पंरपरावादी विचारधारा से हटकर है। अपने शोध ग्रंथ में उन्होंने इस बात को प्रमाणित किया है कि जिस ददरिया को अश्लील गीत की संज्ञा देकर नकारा जाता था उसमें वैदिक जीवन दर्शन, अध्यात्म, मानवता, राष्ट्रीयता के मूल्य समाहित है।

निरूपमा जी की कुछ प्रमुख रचनाओं में स्त्री विमर्श देखने को मिलता है। उनका बालगीत "दाई खेलन दे" के माध्यम से नारी के सम्मान की बात कही गई है –

"तुलसी रानी तुलसी रानी
तोर गजब हे कहानी
सरदी खांसी हमर मिटाथस
पूजा बर महरानी।
तुलसी चौंरा अंगना बीच म
हम तोला पघराथन।
फजर होइस त जल असनायेक
संज्ञा दिया बरोथन।

डॉ.स्नेहलता पाठक

डॉ.स्नेहलता पाठक छत्तीसगढ़ अंचल की पहली महिला व्यंगकार है। उनका व्यंग लेखन अपने परिवेश से जुड़ा है। स्नेहलता जी अपनी रचनाओं में राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिवेश के साथ ही नारी विमर्श को स्थान दिया है। उनके प्रसिद्ध व्यंग स्त्री विमर्श पर केन्द्रित है।

व्यंगकार का वसीयतनामा में संकलित व्यंग रचना में महरी मजबूरी के माध्यम से लेखिका ने बड़े शहरों में घरेलू काम के लिये महरी की आवश्यकता से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला है। उनकी प्रसिद्ध कृति है – मेरे देश की महान नारियां जिसमें स्नेहलता जी ने अपाला मदालसा, अनुसूया, गार्गी, रानी दुर्गावती, मीराबाई, पद्यमनी, जीजाबाई, अहिल्याबाई, रानी लक्ष्मीबाई सहित अनेक प्रसिद्ध महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया है।

एक मुलाकात शुर्पणखा में से स्नेहलता जी ने रामायण काल में शुर्पणखा एवं मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के बीच हुई वार्ता का वर्णन करते हुये आज के मानव की तुलना की है।

"हे शुर्पणखा, हे शुर्पणखा
बन न सकी तुम राम सखा।।
यदि तुम ऐसा कर पाती
मानस की कथा बदल जाती।।

भगवान श्रीराम भारतीय संस्कृति और संस्कारों के पोषक तथा लोक संरक्षक थे। आधुनिक युग के पुरूष कितना भी आदर्शवान हो पर परायी नारियों की ओर आकर्षित होता ही है। इस संपूर्ण में नारियां त्याग व बलिदान की मूरत होती है। शुर्पणखा एक असुल बाला था लेकिन उसके हृदय में भी प्रेम की भावना विद्यमान थी।

डॉ. वंदना केंगरानी

वंदना जी का बचपन साहित्य प्रेमियों के साथ गुजरा। वे बचपन से ही अपनी बड़ी दीदी नीलू मेघ एवं जीजा जी के साथ ही रहती थी। वहीं से उन्होंने अपनी शिक्षा दीक्षा एवं कैरियर की शुरूवात भी की और तभी से लेखन के क्षेत्र में रूचि रखने लगी थी। वंदना जी ने अपने काव्य संग्रह मुठ्ठी में बंद मौसम एवं आंखों में आकाश के माध्यम से नारी जीवन से संबंधित विभिन्न प्रकार की समस्याओं उसकी पीड़ा अंर्तवेदना को दर्शाया है। यह हमें वंदना जी के काव्य संग्रह मुठ्ठी में बंद मौसम की अनेक कविताओं में देखने को मिलता है। वंदना जी ने पिता नामक कविता में एक पुत्री के मन में चल रहे विचारों को इस तरह अभिव्यक्त किया है –

"रोज देखती हूं
पिता का झिंगली
चारपाई की अदबाईन कसते हुए
बिना इस बात की फिक्र किये के
उनके शरीर की अदबाईन भी
रोज ब रोज ढिली होती जा रही है
और मैं बड़ी होती जा रही हूं।
रोज ब रोज।

सुधा वर्मा जी

डॉ.सत्यभामा आडिल की ही तरह सुधा वर्मा जी ने भी हिन्दी के साथ छत्तीसगढ़ी भाषा में निबंध, नाटक, कहानी,उपन्यास, लेख एवं कविताएं लिखी है। प्रायः उनकी रचनाओं में प्रकृति के प्रति गहरा लगाव एवं स्त्री विमर्श देखने को मिलता है। उनकी प्रमुख रचनाओं में स्त्री विमर्श का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

कइसे हस धरती

यह सुधा जी का छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह है जिसमें उन्होंने वर्तमान परिदृश्य में नारियों को असामाजिक तत्वों से सतर्क रहने की प्रेरणा दी है। उन्होंने यह संदेश दिया है कि नारी पूरे साहस के साथ अपने मान–सम्मान को समाज के अपराधिक तत्वों से बचाये रखे। इसी तरह नोनी झन उड़िया में भी लेखिका ने पुरूष प्रधान समाज में रहने वाले असामाजिक तत्वों से समाज में स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाली नारियों को सदैव सतर्क रहने का संदेश दिया है क्योंकि ऐसे तत्व बाज की भांति शिकाार करने के लिए तैयार बैठे रहते है।

डॉ.उर्मिला शुक्ल

डॉ. उर्मिला शुक्ल जी ने कविता जगत में महिलाओं पर लिखे कई भावों को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। कहते है न कि एक औरत की पीड़ा एक औरत ही समझ सकती है क्योंकि वो भी बहुत दुख, दर्द, पीड़ा झेले रहती है। आज की नारी के लेखन में औरत के दुख दर्द का प्रख्यात कवियित्री उर्मिला शुक्ल जी अपनी बोली में लिख पढ़कर बता रही है कि सभी एक हों और एक दूसरी औरत की दुख व पीड़ा को समझे और समाज की कुरीतियों के विरूद्ध लड़ सकें। छत्तीसगढ़ी कविता में अभी नारी विमर्श की चिंता बस कुछ ही साहित्यकार करते है जो कविताओं में छत्तीसगढ़ी औरत के दुख–दर्द को लिख रहे है। उर्मिला शुक्ल जी अपनी हिन्दी और छत्तीसगढी रचनाओं में नारी होने के नाते नारी के दुख दर्द का अहसास करती है और अभिव्यक्त करती है। छत्तीसगढ़ी कविता में उर्मिला शुक्ल जी ने एक औरत की मूल पीड़ा को मुखर किया है। उर्मिला जी ने एक छोटी सी गुड़िया से लेकर युवती और चुल्हा–चौका संभालने वाली गृहणियों तक की संवेदनाओं को वाणी प्रदान की है। हिन्दी साहित्य में इस किस्म के लेखन की सख्त आवश्यकता है जो पितृ सत्तात्मक जनमानस में उद्वेलन पैदा कर सकें।

एक औरत की जिंदगी को व्यक्त करते हुये उर्मिला शुक्ल जी अपनी कविता बुधिया में लिखती है –

"बुधिया के जिनगी
सुरू होईस
बरात के संगे–संगे
बरात के संगे–संगे
रेंगत हे बुधिया।
फेर बरात
कभू नई रूकिस
ओखर दुवारी म।
बुधिया के मुड म
माढ़े हे अंजोरी के मुकुट
फेर अंजोरी कभू
नई थमिस
ओखर जिनगी म
दिया तरी अंधियार ल
साच्छा करत
बुधिया आज तलक
रंगत हे
बरात के संगे संग।"

निष्कर्ष

वस्तुतः अध्ययनगत महिला साहित्यकारों ने हिन्दी और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं में लिखी अपनी रचनाओं में स्त्री मन की वेदना, उसकी पीड़ा, नारी शोषण, अत्याचार उसके निश्चल प्रेम और उसकी ईमानदारी का सूक्ष्म चित्रण किया है। डॉ. सत्यभामा आडिल की हिन्दी व छत्तीसगढ़ी कविताओं, कहानियों, डॉ. स्नेहलता पाठक की व्यंग रचनाओं सुधा वर्मा की कविताओं के साथ कहानी संग्रह, संस्मरण निबंध में डॉ. निरूपमा शर्मा, डॉ. वंदना केंगरानी की कविताओं में और सरला शर्मा की कहानियों में स्त्री विमर्श देखने को मिलता है। इन महिला साहित्यकारों ने नारी जीवन की विविध समस्याओं को समाज के समक्ष पूरे साहस के साथ अभिव्यक्त किया है तो नारी जीवन में वास्तविक स्वरूप को भी प्रतिबिम्बित किया है।

संदर्भ सूची

1. http,//pragyan&vigyan-blogspot-com/2013/04/blog & post_7-html
2. शर्मा, निरूपमा दाई खेलन दे छत्तीसगढ़ महिला कला एवं विकास परिषद, रायपुर 2001, 36.
3. आडिल, सत्यभामा, गोठ, विकल्प प्रकाशन रायपुर, 2000,13.
4. शर्मा निरूपमा, पतरेंगी, पहचान प्रकाशन, 1997, 24.
5. शर्मा निरूपमा, फुरबोलिक, आशु प्रकाशन रायपुर,छत्तीसगढ़
6. पाठक स्नेहलता, बेला फुले आधी रात अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, 2002, 17.
7. केंगरानी, वंदना मुठ्ठी में बंद मौसम, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, 2002, 16.
8. केंगरानी,वंदना मुठ्ठी में बंद मौसम, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, 2002, 21.
9. वर्मा, सुधा, दुलारी, विकल्प प्रकाशन, रायपुर, 2007, 32.
10. उर्मिला शुक्ल छत्तीसगढ़ की अउरत कविता संग्रह, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 6, 5.